रिकार्ड–इस पाप की दुनियां.....ओमशांति प्रातःक्लास 18–4–67

बच्चों ने यह भक्तों का गीत सुना। अभी तुम ऐसा नहीं कहते हो। तुम तो कहते हो हमके उंच ते उंच बाप मिला है। बाकी जो भी इस समय के मनुष्य मात्र हैं सब नीचे ते नीच। उंच ते उंच मनुष्य भी भारत के यह देवी देवतायें ही हैं। भारत उंच ते उंच था। इनकी ही महिमा है सर्वगुण सम्पन्न.....अब नीच मनुष्यों को यह भी पता नहीं कि इन देवताओं को इतना उंच किसने बनाया है। अभी तो बिल्कुल ही पतित,नीच हो गये हैं। यह है ही नीचोंकी तुच्छ बुद्धियों की दुनियां। बाप है उंच ते उंच। साधु ,संत आदि सब उनकी साधना करते हैं। ऐसे साधुओं आदि पिछाड़ी मनुष्य आधा कल्प से भटकते हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो बाप आया हुआ है। हम बाप के पास जाते हैं। श्रीमत पर वो हमको उंच ते उंच श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बनाते हैं। यहां है भष्ट ते भ्रष्ट मत। मां–बाप, चाचा, काका, गुरू गुसाईं आदि जो भी है उनकी है नीच मत। जन्म जन्मांतर उनकी मत पर तुम चलते आये हो। अभी कहते हो बाबा हम तो अब आपकी मत उंच ते उंच मत पर ही चलेंगे। बाप समझाते हैं इन गुरुओं आदि ने तुमको डुबोया है। रावण राज्य में जो भी मनुष्य होंगे वा सब रावण की मत पर तुमको असुर दुःखी ही बनावेंगे। अब एक ही बाप तुमको सुखी बनाते हैं। रावण की मत पर तुच्छ बुद्धि बने हो। अभी तुम और किसकी मत पर मत चलो। इन गुरुओं आदि ने तुमको डुबोया है। रावणराज्य में जो भी मनुष्य होंगे वो सब रावण की मत पर तुमको असुर दुःखी ही बनावेंगे। अब एक ही बाप तुमको सुखी बनाते हैं। रावण की मत पर तुच्छ बुद्धि बने हो। अभी तुम और किसकी मत पर मत चलो। उन गुरुओं आदि ने तुमको डुबोया है तब तो मुझ पतित–पावन को पुकारते हो। फिर भी डुबोने वालों पिछाड़ी क्यों पड़ते हो?यह तो बेसमझ बुद्धि हुए ना। समझदार बनते ही नहीं हैं। एक की मत को छोड़कर धक्के खाते ही रहेंगे, गंगा स्नान करेंगे, गुरू पास जावेंगे। बाप कहते हैं वो गंगा कोई पतित–पावन तो है नहीं। फिर भी तुम आसुरी मत पर चल कर जाकर गंगा स्नान आदि करेंगे तो बाप कहेंगे कि मेरी उंच ते उंच मत पर तुमको भरोसा नहीं है। एक तरफ है ईश्वरीय मत, दूसरी तरफ है आसुरी मत। इनका हाल क्या होगा?दोनों तरफ पांव रखेंगे तो चिर पड़ेंगे। बाप में भी पूरा निश्चय नहीं रखते हैं। कहते भी हैं बाबा हम आपके हैं। आपकी श्रीमत पर ही हम श्रेष्ठ बनेंगे। इन गुरू गुसाइयों आदि की मत पर चलकर तो हम गिरे ही हैं। फिर भी तमोप्रधान बुद्धि होने कारण कुछ भी समझते नहीं हैं। हमको कदम2 पर उंच ते उंच बाप की मत पर चलना है। शांतिधाम–सुखधाम का मालिक तो बाप ही बनावेंगे ना। फिर बाप कहते हैं जिसके शरीर में मैंने प्रवेश किया है उसने भी 21 गुरू किये हैं। यह भी तमोप्रधान ही बना है। फायदा कुछ भी नहीं हुआ। अब बाप मिला है तो सबको छोड़ दिया। उंच ते उंच बाप मिला फिर गुरू कितने भी किये उनका तो अब मुंह भी नहीं देखते। बाप ने कहा ना हियर नो ईविल सी.....डुबोने वालों की तो शक्ल भी नहीं देखनी चाहिए। दुश्मन ठहरे ना ;परंतु मनुष्य है बिल्कुल पतित तमोप्रधान बुद्धि। यहां भी बहुत हैं श्रीमत पर चल नहीं सकते हैं। ताकत ही नहीं है। माया धक्का खिलाती रहती है ;क्योंकि रावण है दुश्मन। राम है मित्र। कोई राम कहते हैं ,कोई शिव कहत हैं। असली नाम है शिवबाबा। बाप कहते हैं हॅू तो मैं भी आत्मा ;परंतु मुझ आत्मा का नाम शिवबाबा है। मैं कब पुनर्जन्म में नहीं आता हॅू। मेरा ड्रामा में नाम ही शिव रखा हुआ है। एक चीज के 10नाम रखने से मनुष्य मूंझ जावेंगे। तमोप्रधान मुनष्य हैं ना। जिनको जो आता वो ही नाम रख देते हैं। असली मेरा नाम शिव है। मैं इस शरीर को धारण करता हॅू। मैं कोई कृष्ण में नहीं आता हॅू। देखते भी हैं ब्र.वि.शं. ;परंतु इन बातों को तुच्छ बुद्धि मनुष्य कुछ भी नहीं जानते हैं। सबको माया ने तुच्छ बना दिया है। वो समझते हैं विष्णु सूक्ष्मवतन में रहने वाला है। वास्तव में वो है युगल रूप प्रवृत्ति मार्ग। बाकी चार भुजायें कोई की होती नहीं हैं। चार भुजा माना प्रवृत्तिमार्ग। दो भुजा है निवृत्तिमार्ग। बाप ने प्रवृत्ति मार्ग का धर्म स्थापन किया है। सन्यासी निवृत्ति मार्ग के हैं। प्रवृत्ति मार्ग वाले ही फिर पावन से पतित बनते हैं। इसलिए ही सृष्टि को थमाने के लिए सन्यासियों का पार्ट है पवित्र बनने का। वो भी लाखों–करोड़ों होंगे। मेला जब लगता है तो बहुत आते

हैं। वो खाना पकाते नहीं हैं। गृहस्थियों की पालना पर चलते हैं। कर्मसन्यास किया फिर भोजन कहां से मिले। तो गृहस्थियों से खाते हैं। गृहस्थी लोग समझते हैं यह भी हमारा दान होता है। दान हुआ फिर दूसरी तरफ पाप भी हुआ ;क्योंकि वो मंत्र ही उल्टा देते हैं। बेहद के बाप की ग्लानी कर देते हैं। इसलिए ही बाप कहते हैं जो भी गुरू आदि किया है वो सब तुम्हारे शत्रु हैं। उनकी भी विनाश काले विपरीत बुद्धि है। तुम भी ऐसे ही कहते थे। यह भी ऐसे ही कह देते थे ईश्वर सर्वव्यापी है। जिधर देखता हूँ उधर भगवान ही भगवान है। यह नारायण की पूजा करते थे। जानते थोड़े ही थे। यह भी पुजारी पतित था। फिर अब श्रीमत पर चलकर पावन बन रहा है। बाप से वर्सा लेने पुरुषार्थ कर रहे हो। तब कहते हैं फालो करो। माया हर बात में पछाड़ती बहुत है। देह अभिमान से ही मनुष्य पाजी बनते हैं। बाबा पास सैन्टर्स से समाचार आता है कि फलाने सेंटर पर आपस में बहुत लड़ते हैं। देह अभिमान है। भल गरीब हो वा साहुकार हो ;परंतु देह अभिमान भी जब टूटे ना। देह अभिमान में तोड़ने में ही बड़ी मेहनत है। बाप कहते हैं तुम अपने के आत्मा समझ देह से पार्ट बजाओ। तुम देह अभिमान में क्यों आते हो?ड्रामा अनुसार देह अभिमान में भी आना ही है। इस समय तो पक्के देह अभिमानी बने पड़े हो। बाबा कहते हैं तुम तो आत्मा हो। आत्मा ही सब कुछ करती है। आत्मा ही कहती है कि मैं जज हूँ, फलाना हूँ। आत्मा शरीर से निकल जावे,शरीर को काटो तो शरीर से आवाज कुछ निकलेगा?कुछ भी नहीं। आत्मा ही कहती है मेरे शरीर के मत दुखाओ। आत्मा अविनाशी है। शरीर विनाशी है। अपने के आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। देह अभिमान छोड़ो। जितना देहीअभिमानी बनेंगे उतना ही तंदुरुस्त निरोगी भी रहेंगे। आयु भी बड़ी होगी। इस योगबल से ही तुम 21जन्म तक निरोगी बनेंगे। जितना बनेंगे उतना ही पद भी उंच मिलेगा। सजा से बचेंगे। नही तो सजायें बहुत खानी पड़ेंगी। इतने लाखों,करोंड़ों से देहीअभिमानी सिर्फ 8 बनते हैं। आठ की माला है ना। वो भी नम्बरवार हैं। तो कितना देही अभिमानी बनना है। 8, फिर है 1000 ,फिर है 16000, स्कूल में भी नम्बर्स तो होते हैं ना। कोई तो दास–दासियां बनते हैं फिर पिछाड़ी में करके थोड़ी राजाई मिलती है। एक जन्म राजाई मिलेगी। बाकी सब जन्म नौकरी करते आवेंगे। फिर तो होता है रावण राज्य। उनकी प्रारब्ध पूरी हुई। यह बातें कोई शास्त्रों में नहीं हैं। साधु, संत ,गुरू आदि की तकदीर में भी ज्ञान है नहीं। जब तक कि तुम्हारे कुल में ना आवे अर्थात् ब्राह्मण मुखवंशावली ना बने। ब्राह्मण बनने बिना देवता कैसे बन सकेंगे?भल आते बहुत हैं। बाबा लिखते अथवा कहते भी हैं ;परंतु सिर्फ कहने ही मात्र। एक, दो पत्र लिखे फिर गुम। वो भी आवेंगे ;परंतु प्रजा में। प्रजा तो बहुत बननी है ना। आगे चलकर जब बहुत दुःख होगा तो बहुत भागेंगे। आवाज होगा भगवान आया है। तुम्हारे भी बहुत सेंटर्स खुल जावेंगे। तुम बच्चों का भी दोष है। देहीअभिमानी बनते नहीं हो। बहुत देहअभिमान हैं फिर पद भी कम हो जावेगा। फिर जाकर दास–दासियां बनेंगे। दास–दासियां भी नम्बरवार ढेर की ढेर होते हैं। राजाओं के दासियां दहेज में मिलती हैं। साहुकारों को नहीं मिलती। राजायें दहेज में ले जाते हैं। वहां पर भी ऐसा ही होता है। बच्चों ने देखा है राधा कितनी दासियां दहेज में ले जाती है। आगे चलकर तुमको (बहुत) सा. होंगे। हल्की दासी बनने से तो साहुकार प्रजा बनना अच्छा है। ...ग्रेड दासी को पिछाड़ी में जाकर एक, दो जन्म राजाई मिलेगी। दासी अक्षर ही खराब है। प्रजा में साहुकार बनना फिर भी अच्छा है। बाप का बनने से माया और ही खातिरी करती है। रुस्तम से रुस्तम होकर लड़ती है। देह अभिमान आ जाता है। शिवबाबा से भी बेअदब हो जाते हैं। बाप के याद करना ही छोड़ देते हैं। कब बाबा को पत्र भी नहीं लिखते हैं। पत्र लिखने में कोई समय नहीं लगता है। फिर झूठ बोलते कि फुर्सत नहीं मिली। खाने की फुर्सत है?और ऐसा बाबा जो विश्व का मालिक बनाते हैं उनको एक कार्ड लिखने की फुर्सत नहीं है। बाबा हम राजी–खुशी हैं।

सर्विस कर रहे हैं। अच्छे2 बच्चे पत्र नहीं लिखते हैं। खाने की, कपड़े पहनने की फुर्सत है। बाकी कार्ड लिखने की फुर्सत नहीं है। शिवबाबा को भूलकर देहअभिमान में आ जाते हैं इसलिए ही फिर बहाना करते हैं। बाप को याद करते रहेंगे तो जरूर खयाल आवेगा कि ऐसा बाप जो हमको जी दान देता है उनको पत्र लिखूं। स्त्रियों का पति के साथ प्यार होता है तो रोज पत्र लिखती हैं। पत्र नहीं आवे तो तड़फ मरती हैं। यहां तो बात मत पूछो। माया एकदम नाक से पकड़कर उड़ा देती है। कदम2 पर श्रीमत पर पदम है। तुम्हारे भी कदम2 पर पदम है। तुम अनगिणत धनवान बनते हो। वहां गिनती होती ही नहीं है। धन–दौलत ,खेती, बाड़ी सब मिलती है। वहां पर तांबा, पीतल आदि होता ही नहीं है। सोने के ही सिक्के होते हैं। मकान ही सोने के बनाते हैं तो बाकी क्या नहीं होगा। यहां तो गवर्मेंट प्रजा से लेकर भी छीनती जाती है। समझते थोड़े ही है आसुरी बुद्धि। कोई को कहो तो बिगड़ पड़े। गवर्मेंट के ही आफीसर्स कहते हैं कि यह तो राक्षस राज्य है। भ्रष्टाचारी राज्य है। तो सब भ्रष्टाचारी ही हो गये। यथा राजा–रानी तथा प्रजा। सतयुग में यथा राजा–रानी तथा प्रजा सब श्रेष्ठाचारी होते हैं ;परंतु मनुष्यों की बुद्धि में यह बैठता थोड़े ही है। सब तमोप्रधान हैं। बिल्कुल ही जंगली जनावर हैं। बाप समझाते हैं कि तुम भी ऐसे ही थे। यह भी ऐसा ही था। जंगली जनावरों के ही आकर अब ऐसा देवता बनाता हूँ तो भी बनते नहीं हैं। आपसे में ही लड़ते–झगड़ते रहते हैं। मैं पहलवान हूँ, ऐसा हूँ। यह कोई समझते थोड़े ही हैं कि दोजख में पड़े हुए हैं। हम नर्कवासी है। रौरव नर्क में पड़े हुए हैं। यह भी तुम्हीं बच्चे जानते हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बिल्कुल ही जंगली जनावर हैं। बाप समझाते हैं कि तुम भी ऐसे ही थे, यह भी ऐसा ही था। जंगली जनावरों को ही आकर अब ऐसा बनाता हूँ। तो भी बनते नहीं हैं। आपस में ही लड़ते–झगड़ते रहते हैं। मैं पहलवान हूँ।ऐसा हूँ। यह कोई समझते थोड़े ही हैं कि दोजख में पड़े हुए हैं। हम नर्कवासी हैं। रौरव नर्क में पड़े हुए हैं। यह भी तुम्हीं बच्चे जानते हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बिल्कुल नर्क में पड़े हैं। रात–दिन चिंताओं में सड़ते ,मरते रहते हैं। आप समान बनाने की सर्विस नहीं करते हैं तो बीमार रोगी हो जाते हैं। अब बाप कहते हैं और कोई का मत सुनो। मुझे ही याद करो। दूसरे कोई को याद किया तो अव्यभिचारी ठहरे। मनुष्य तो असुर हैं ना। देवताओं को याद करें तो भी बेहतर है। मनुष्य को याद करने से कोई फायदा नहीं होगा। मनुष्य,गुरू आदि सब पतित हैं ना। देवतायें तो फिर भी पवित्र हैं। आजकल तो मनुष्यों के गुरुओं के पुजारी बन गये हैं। गुरू का लाकेट पहनते हैं। तो गोया बड़ा गुरू हो गया। बाप कहते हैं इस समय के गुरू आदि सब हैं राक्षस। बाप से ही बेमुख कर देते हैं। इसलिए ही इनका नाम रखा है हरण्याकश्यप। इसलिए गाया भी जाता है गुरू जिसका अंधला चेले.....सब तमोप्रधान हैं। बाप को ही गाली देते रहते हैं। बाप कहते हैं जब2 मैं आता हूँ तुम मुझे गाली देते रहते हो कच्छ अवतार, मच्छ अवतार। मैं तो कहता हूँ मनुष्य2 ही बनते हैं। मुझे फिर कच्छ–मच्छ अवतार कह देते हो। उनकी तुम टांग छोड़ते नहीं हो। यहां बाप किसकी भी टांग पकड़ने नहीं देते हैं। कहत हैं सिर क्यों झुकाते हो?शिवबाबा को पांव थोड़े ही है जो तुम सिर झुकाते हो। इसलिए शिवबाबा कहते हैं कि जब गोद में भी आओ तो शिवबाबा को याद करके आओ। शिवबाबा को याद नहीं करते हो तो गोया पाप करते हो और पवित्र हो तो गोद ले सकते हो। पतित हो तो गोया मेहतर हो। मूत पीते हो ना। तो फिर बाबा तो कहते हैं मेरे शरीर को भी टच नहीं करो। पहले तो पवित्र बनने की प्रतिज्ञा करो तब गोद ले सकते हो। सो भी शिवबाबा को याद करके। शिवबाबा हम इसमें आपको समझकर भाकी पहनते हैं। समझ चाहिए ना। बहुत परहेज है। बहुत मुश्किल कोई समझते हैं। इतनी बुद्धि नहीं है बाप से कैसे चला जावे। इसमें तो बड़ी मेहनत है। माला का दाना बनना कोई मासी का घर थोड़े ही है। शरीर पर भरोसा तो है नही तो डर रहना चाहिए ना। अभी कर्मातीत अवस्था तो हुई नहीं है। मुख्य है बाप को याद करना है। तुम बाप को याद कर नहीं सकते हो। बाबा की सर्विस बाप की याद कितनी चाहिए। बाबा रोज कहते हैं पोतामेल निकालो। कल्याण के लिए बाबा कितना समझाते रहते हैं। सब प्रकार की परहेज चाहिए। जांच करनी है हमारा खान–पान ऐसा तो नहीं। हब्शी तो नहीं हूँ। माया चक्र लगाकर उल्टा–सुल्टा काम कराती ही रहती है। बचना है। ओम।